बीए–हिन्दी–प्रतिष्ठा–प्रथम वर्ष

रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि : बिहारी

बिहारी ने जिस छंद में रचनाएँ की है, उसका नाम दोहा है। उनकी प्रमाणिक दोहों की कुल संख्या 713 निर्धारित किया गया है। बिहारी द्वारा रचित पुस्तक का नाम "बिहारी सतसई" है। बिहारी राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। बिहारी की सर्वप्रसिद्ध रचना है –

"नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।

अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल।।38।।"

(बिहारी रत्नाकर)

अर्थात्– कवि इस दोहे में भ्रमर के माध्यम से राजा को सचेत करते हुए कहता है कि – न अभी पराग, न मीठा मकरन्द और न विकास है। हे भ्रमर तू कली ही से बंधा है। वस्तुतः अभी रानी की उम्र कम है, वह पूर्णतः युवती नहीं हुई है। राजा अपनी नयी रानी के प्रेम में इस प्रकार मग्न है कि अपने सब कर्तव्य छोड़कर उसी में लीन हो रहा है। आगे चलकर जब उसमें पराग, मकरंद तथा विकास का आगमन होगा तो फिर क्या दशा होगी। इस दोहे को पढ़ने के बाद राजा जयसिंह बहुत खुश हुए थे, और बिहारी लाल को प्रत्येक दोहे के बदले एक अशर्फी(सोने का सिक्का) देने की घोषणा की थी।

बिहारी को नीति, भक्ति और श्रृंगार का कवि कहा जाता है। भक्ति और श्रृंगार को बिहारी के इस दोहे से समझ सकते हैं –

"प्रानप्रिया हिय मैं बसै, नखरेखा–ससि भाल।

भलौ दिखायौ आइ यह हरि–हर–रूप, रसाल।।297।।"

(बिहारी रत्नाकर)

अर्थात्– जिस प्रकार भगवान् विष्णु के हृदय में लक्ष्मीजी बसती हैं और शिवजी के मस्तक पर चंद्रमा रहता है। उसी प्रकार आपके हृदय में प्राणप्रिया बसी है, नखरेखा–रूपी शशि भाल में हे रसाल आपने आज आकर यह हरि(विष्णु) और हर(शिव) का रूप एक साथ बड़ा उत्तम दिखलाया है।